Test-1

यूपीपीसीएस मेन्स (2024)

सामान्य अध्ययन : पेपर - I

Model Answers

(खण्ड-I)

प्रश्न 1. भारत में बौद्ध, हिंदू और जैन गुफाओं की स्थापत्य शैली की तुलना करें।

उत्तरः भारत की गुफा वास्तुकला सदियों से बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म के धार्मिक, दार्शनिक और कलात्मक विकास को दर्शाती है।

बौद्ध गुफाएंः

- सबसे प्रारंभिक उदाहरण (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) जैसे बराबर और अजंता की गुफाएँ।
- इनमें विहारों (मठों) और चैत्यों (प्रार्थना कक्षों) के साथ सादगी और मठवासी उपयोगिता पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- ये गुफाएं समृद्ध भित्ति चित्र और नक्काशी जातक कथाओं और बुद्ध के जीवन को दर्शाती हैं।

हिन्दू गुफाएंः

- गुप्त और राष्ट्रकूट राजवंशों (उदाहरण के लिए, एलीफेंटा गुफाएँ) के तहत विकसित हुई।
- इनमें शिव (एलीफेंटा में महेशमूर्ति) जैसे देवताओं की भव्य मूर्तियां बनाई गयी है।
- इनमें गतिशील रूपों, जटिल प्रतीकात्मकता और पौराणिक कथाओं पर जोर दिया गया है।

जैन गुफाएंः

- मुख्यतः एलोरा और उदयगिरि में पाई जाती हैं।
- सादगी और विस्तृत अलंकरण का संयोजन इनकी विशेषता है।
- ध्यानमग्न मुद्रा में तीर्थंकरों का चित्रण तथा आध्यात्मिक पवित्रता का प्रतीक सूक्ष्म शिल्पांकन प्रस्तुत करती हैं।

जहाँ बौद्ध गुफाएँ ध्यान और सादगी की मिसाल हैं, वहीं हिन्दू गुफाएँ ईश्वरीय वैभव का भव्य चित्रण करती हैं। जैन गुफाएँ तप और कलात्मक सौंदर्य के अद्भुत संतुलन को दर्शाती हैं। ये तीनों परंपराएँ मिलकर भारत की सांस्कृतिक विरासत को और भी गौरवमयी बनाती हैं।

Chronicle ias

विशेषता	बौद्ध गुफाएँ	हिंदू गुफाएँ	जैन गुफाएँ
काल	ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से	ईस्वी 5वीं शताब्दी से	ईस्वी 6वीं शताब्दी से
उद्देश्य	निवास करने और पूजा के लिए	मंदिर पूजा एवं देवी-देवताओं का चित्रण	तीर्थंकरों की पूजा और उनका चित्रण
मुख्य संरचनाएँ	विहार (मठ), चौत्य (प्रार्थना कक्ष)	शैलकृत मंदिर, मंडप	शैलकृत मंदिर, ध्यान कक्ष
मुख्य विशेषताएँ	सादगी, ध्यान पर केंद्रित; जातक कथाओं के भित्तिचित्र	समृद्ध प्रतीकात्मकता; देवी-देवताओं की मूर्तियाँ	सादगी और विस्तृत अलंकरण का संयोजन
प्रसिद्ध उदाहरण	अजंता गुफाएँ, बाराबार पहाड़ियाँ	एलिफेंटा गुफाएँ, एलोरा (हिंदू खंड)	एलोरा (जैन गुफाएँ), उदयगिरि-खांडगिरि गुफाएँ
कलात्मक शैली	कोमल, कथानक-आधारित चित्रकला व नक्काशी	भव्य मूर्तियाँ, पौराणिक विषयवस्तु	सूक्ष्म, संतुलित नक्काशी; समरूपता पर बल
प्रतिनिधि देवता	बुद्ध एवं बोधिसत्त्व	शिव, विष्णु तथा अन्य हिंदू देवी-देवता	तीर्थंकर (आध्यात्मिक गुरु)

प्रश्न 2. विभिन्न क्षेत्रों से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही, हालांकि उन्हें अक्सर कम आंका गया। उन्होंने वैचारिक, क्षेत्रीय और वर्गीय सीमाओं के पार योगदान दिया।

- **नेतृत्व और जन आंदोलनः** बंगाल में सरोजिनी नायडू ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया। महाराष्ट्र में सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा को प्रतिरोध का माध्यम बनाकर महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

- **क्रांतिकारी भागीदारीः** बंगाल में कल्पना दत्त और प्रीतिलता वाडेदार ने चटगांव शस्त्रागार कांड के तहत सशस्त्र संघर्षों में हिस्सा लिया।

- **किसान और जनजातीय आंदोलनः** आंध्र प्रदेश में उय्यालवाड़ा नरसिम्हा रेड्डी की पत्नी और अन्य महिलाओं ने ब्रिटिश विरोधी किसान आंदोलनों में सहयोग दिया। उत्तर-पूर्व में रानी गाइदिन्ल्यू ने अंग्रेजों के खिलाफ एक जनजातीय आंदोलन का नेतृत्व किया।

- **सहायक भूमिकाएँ और सामाजिक सुधारः** एनी बेसेंट और कस्तूरबा गांधी जैसी महिलाओं ने सुधार आंदोलनों और सविनय अवज्ञा के माध्यम से सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना को प्रेरित किया।

देशभर की महिलाओं ने सामाजिक अवरोधों को पार करते हुए बलिदान दिए और जनसमूहों को संगठित किया, तथा भारत की स्वतंत्रता की राह में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सिद्ध की।

Chronicle ias

प्रश्न 3. स्वतंत्रता के बाद रियासतों को एकीकृत करने में भारत के सामने आई चुनौतियों का विश्लेषण करें।

उत्तर: 1947 में भारत को 565 देसी रियासतों के एकीकरण की विशाल चुनौती का सामना करना पड़ा, जो कानूनी रूप से ब्रिटिश अधीनता के अंतर्गत स्वायत्त थीं। राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करना एक गंभीर चुनौती थी।

- **राजनीतिक विखंडन:** रियासतों को भारत, पाकिस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र रहने की स्वतंत्रता थी, जिससे राष्ट्रीय एकता पर खतरा मंडरा रहा था।
- **शासकों का विरोध:** हैदराबाद के निजाम और जूनागढ़ के नवाब जैसे कई शासक अपने विशेषाधिकारों के खोने के भय से स्वतंत्र रहने या पाकिस्तान में विलय का प्रयास कर रहे थे।
- **भौगोलिक और साम्प्रदायिक जटिलता:** हैदराबाद (मुस्लिम शासक, हिंदू बहुल प्रजा) और कश्मीर (हिंदू शासक, मुस्लिम बहुल प्रजा) ने अद्वितीय चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं।
- **कानूनी और संवैधानिक शून्यता:** ब्रिटिश शासन के समाप्त होने के बाद रियासतों के विलय को बाध्य करने के लिए कोई वैधानिक तंत्र शेष नहीं था।
- **बाल्कनाइजेशन का खतरा:** यदि रियासतें स्वतंत्र इकाइयों में बँट जातीं, तो भारत की एकता और स्थिरता गंभीर रूप से प्रभावित होती।

सरदार पटेल के व्यावहारिक नेतृत्व और वी.पी. मेनन की प्रशासनिक कुशलता के बल पर भारत ने कूटनीति, वैधानिक साधनों और आवश्यकता पड़ने पर सैन्य बल का उपयोग कर ऐतिहासिक राष्ट्रीय एकीकरण को सफलतापूर्वक संपन्न किया।

Chronicle ias

प्रश्न 4. भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आदिवासी विद्रोहों के महत्व पर प्रकाश डालें।

उत्तरः आदिवासी विद्रोहों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम की व्यापक गाथा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, यद्यपि उन्हें मुख्यधारा के इतिहास लेखन में अक्सर उपेक्षित किया गया। ये विद्रोह अलग-अलग या अराजनीतिक नहीं थे; वे औपनिवेशिक शोषण, सांस्कृतिक अलगाव और सामाजिक-आर्थिक उत्पीड़न के खिलाफ गहरे प्रतिरोध का प्रतिनिधित्व करते थे।

1. औपनिवेशिक शासन के प्रति प्रारंभिक प्रतिरोध

- आदिवासी विद्रोह ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध के सबसे प्रारंभिक रूपों में से थे।
- संथाल विद्रोह (1855-56) और कोल विद्रोह (1831-32) 1857 के विद्रोह से भी पहले हुए, जो आदिवासियों की औपनिवेशिक शोषण नीतियों के प्रति जागरूकता और विरोध को दर्शाते हैं।

2. स्वदेशी पहचान और अधिकारों का दावा

- आदिवासी अपने भूमि अधिकारों, वनाधिकारों और पारंपरिक प्रणालियों पर अतिक्रमण का विरोध कर रहे थे।
- बिरसा मुंडा जैसे नेता मुंडा विद्रोह (1899-1900) में आदिवासी परंपराओं और प्रतिरोध भावना के मिश्रण से स्वशासन की परिकल्पना लेकर आए।

3. आर्थिक शोषण को चुनौती

- ब्रिटिश भू-राजस्व प्रणालियों, महाजनों और ठेकेदारों ने आदिवासी अर्थव्यवस्था को बर्बाद कर दिया।
- विद्रोहों ने सामूहिक स्वामित्व के नुकसान, जबरन श्रम और अन्यायपूर्ण कराधान का विरोध किया।

4. सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिरोध

- आदिवासी विद्रोहों ने विदेशी मूल्यों, धर्म और प्रशासनिक प्रणालियों के थोपे जाने का भी विरोध किया।
- ये विद्रोह आदिवासी स्वायत्तता, परंपराओं और विश्वास प्रणालियों की रक्षा के संघर्ष का प्रतीक बने।

5. जन-संगठन और स्थानीय नेतृत्व

- इन विद्रोहों ने बड़ी संख्या में आदिवासी समुदायों को संगठित किया और सिद्धू-कान्हू, अल्लूरी सीताराम राजू और ताना भगत जैसे करिश्माई नेताओं को जन्म दिया।
- इन्होंने जमीनी स्तर पर जन-संगठन को उजागर करते हुए बाद के जन आंदोलनों की राह तैयार की।

6. प्रेरणादायक विरासत

- आदिवासी विद्रोहों ने एक स्थायी विरासत छोड़ी जिसने क्षेत्रीय और राष्ट्रीय आंदोलनों को प्रेरित किया।
- इनकी भावना गांधीवादी आंदोलनों में भी दिखाई दी, जहाँ आदिवासी क्षेत्र सक्रिय प्रतिरोध केंद्र बने (जैसे अल्लूरी का असहयोग आंदोलन के प्रति समर्थन)।

आदिवासी विद्रोह न केवल तत्काल प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण थे, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में उनके नैतिक और राजनीतिक प्रतीकात्मक योगदान ने भारत की आजादी के आंदोलन को न्याय, गरिमा और आत्मनिर्णय की मांग करने वाली विविध आवाजों से समृद्ध किया।

Chronicle ias

प्रश्न 5. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) के भारतीय समाज पर प्रभाव का आलोचनात्मक विश्लेषण करें।

उत्तर: 1991 के आर्थिक सुधारों ने एक राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था से एक बाजार-प्रेरित मॉडल की ओर एक बड़े बदलाव का संकेत दिया, जिसका उद्देश्य भुगतान संतुलन संकट का समाधान करना था।

- इन सुधारों ने भारत की जीडीपी वृद्धि को तेज किया (पुनः सुधार के दशकों में औसतन 6-7%) लेकिन इसके साथ ही सामाजिक बदलावों को भी जन्म दिया, जिनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव थे।

आर्थिक सुधारों के भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव

आर्थिक सशक्तिकरण और मध्य वर्ग का उत्थान:

- भारत की जीडीपी 1.1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर (2000) से बढ़कर 3.7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर (2023) हो गई।
- शहरीकरण 25% (1991) से बढ़कर 35% (2023) तक पहुँच गया, जिससे एक बड़ा उपभोक्ता आधार तैयार हुआ।

सेवाएँ क्षेत्र में वृद्धि:

- सेवाएँ 2023 तक भारत की जीडीपी में लगभग 55% का योगदान करने लगीं।
- IT-BPO क्षेत्र ने अकेले 5 मिलियन से अधिक लोगों को रोजगार दिया, जिससे वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हुई।

उपभोक्ता विकल्पों में वृद्धि:

- वैश्विक ब्रांडों की एंट्री ने विभिन्न प्रकार के सामान और जीवनशैली तक पहुँच प्रदान की।
- मोबाइल की पहुंच 0.3% (1991) से बढ़कर आज 85% से अधिक हो गई है।

महिलाओं की भागीदारी:

- बीपीओ, खुदरा और बैंकिंग क्षेत्रों में महिलाओं की रोजगार दर में वृद्धि हुई।
- वित्तीय स्वतंत्रता और सामाजिक गतिशीलता, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में, को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा मिला।

Chronicle ias

आर्थिक सुधारों के भारतीय समाज पर नकारात्मक प्रभाव

बढ़ती असमानता:

- भारत का गिनी गुणांक (असमानता का माप) 0.32 (1993) से बढ़कर 0.38 (2020) हो गया।
- ग्रामीण-शहरी आय में असमानताएँ बढ़ीं।
- भारत के शीर्ष 1% ने 2021 में अपनी कुल संपत्ति का 40.5% से अधिक हिस्सा जमा किया। (ऑक्सफेम रिपोर्ट)

कृषि संकट:

- जीडीपी में कृषि का योगदान 32% (1991) से घटकर 15% (2023) हो गया।
- वैश्विक बाजार ताकतों के प्रभाव से किसान आत्महत्याएँ और ग्रामीण कर्जों का संकट गहरा हुआ।

सांस्कृतिक समानता:

- वैश्विक मीडिया और ब्रांडों ने पश्चिमी जीवनशैली को बढ़ावा दिया, जिससे स्वदेशी संस्कृतियों और परंपराओं को हाशिए पर धकेल दिया गया।

बेरोजगारी में वृद्धि:

- उच्च जीडीपी वृद्धि के बावजूद, रोजगार के लचीलेपन में कमी आई।
- औपचारिक क्षेत्र में रोजगार स्थिर हो गए, जबकि अनौपचारिक और गिग अर्थव्यवस्था में रोजगार में वृद्धि हुई, जिससे नौकरी की सुरक्षा में कमी आई।

हालांकि एलपीजी सुधारों ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में सफलतापूर्वक एकीकृत किया और लाखों लोगों को मध्यवर्ग में स्थान दिलाया, उनके सामाजिक परिणाम-विशेष रूप से बढ़ती असमानता और ग्रामीण संकट-यह दर्शाते हैं कि समावेशी विकास रणनीतियों, ग्रामीण पुनर्जीवन कार्यक्रमों और मजबूत नियामक ढाँचों की आवश्यकता है, ताकि आर्थिक समृद्धि व्यापक और स्थिर हो सके।

Chronicle IAS

प्रश्न 6. भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए और सतत जनसंख्या नियंत्रण के उपाय सुझाइए।

उत्तर: भारत के दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बनने का अनुमान है, जिसकी जनसंख्या 1.4 अरब से अधिक होगी। जहाँ सही प्रबंधन से जनसंख्या एक संपत्ति बन सकती है, वहीं अनियंत्रित वृद्धि विकास और पर्यावरण के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है।

तीव्र जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न चुनौतियाँ:

1. **संसाधनों और बुनियादी ढांचे पर दबाव:** अत्यधिक जनसंख्या भीड़भाड़, जल संकट, आवास की कमी और शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं जैसी सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव बढ़ाती है।
2. **बेरोजगारी और अल्प रोजगार:** कार्यबल में बड़ी संख्या में लोगों के प्रवेश से रोजगार सृजन एक बड़ी चुनौती बन जाती है, जिससे असंगठित क्षेत्र का विस्तार और असमानता में वृद्धि होती है।
3. **पर्यावरणीय क्षरण:** अधिक जनसंख्या का मतलब अधिक उपभोग, अधिक कचरा उत्पन्न करना और पारिस्थितिक तंत्र पर अधिक दबाव होता है, जो प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन में योगदान देता है।
4. **खाद्य और जल असुरक्षा:** जनसंख्या वृद्धि जब कृषि उत्पादकता और जल उपलब्धता की दर से अधिक बढ़ जाती है, जिससे खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है।
5. **शहरी झुग्गियाँ और जीवन स्तर की गिरावट:** जनसंख्या दबाव के कारण तेज शहरी प्रवासन से झुग्गियों का प्रसार, अस्वच्छता और स्वास्थ्य संकट उत्पन्न होते हैं।

सतत जनसंख्या नियंत्रण हेतु उपाय:

- बेहतर प्रजनन विकल्पों के लिए महिला शिक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।
- परिवार नियोजन सेवाओं को सुलभ बनाना और गर्भनिरोधक साधनों व जागरूकता अभियानों को मजबूत करना।
- समुदायों की भागीदारी से देर से विवाह और छोटे परिवार के आदर्श को प्रोत्साहित करना।
- नीतियों और लाभों के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण को प्रोत्साहित करना।
- केरल और तमिलनाडु जैसे सफल उदाहरणों से सीखते हुए राज्य-विशिष्ट जनसंख्या नीतियाँ लागू करना।

भारत को विकासात्मक आवश्यकताओं, सततता और मानवीय गरिमा के बीच संतुलन बनाते हुए एक समग्र और अधिकार-आधारित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, ताकि जनसंख्या को नियंत्रण में रखते हुए समावेशी विकास सुनिश्चित किया जा सके।

प्रश्न 7. भारत में शरणार्थियों द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों का विश्लेषण करें तथा एक संतुलित नीति दृष्टिकोण सुझाएँ।

उत्तर: भारत, भले ही 1951 के संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी सम्मेलन का हस्ताक्षरकर्ता नहीं है, फिर भी ऐतिहासिक रूप से तिब्बती, श्रीलंकाई तमिल, चकमा और रोहिंग्या जैसे बड़ी संख्या में शरणार्थियों को आश्रय देता रहा है।

- हालाँकि, शरणार्थियों की आमद शासन, सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक स्तर पर कई चुनौतियाँ उत्पन्न करती है।

भारत में शरणार्थियों से उत्पन्न चुनौतियाँ:

- **एक समान शरणार्थी कानून की अनुपस्थिति:** भारत में शरणार्थियों और अवैध प्रवासियों के बीच अंतर करने के लिए कोई व्यापक कानूनी ढांचा नहीं है, जिससे तदर्थ (Ad-hoc) नीति निर्णय लेने पड़ते हैं।
- **सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** अनियंत्रित शरणार्थी प्रवाह आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता है, जिसमें कट्टरपंथीकरण, सीमा-पार आतंकवाद और अवैध हथियारों की तस्करी जैसी समस्याएँ शामिल हैं।
- **संसाधनों और सेवाओं पर दबाव:** बड़ी शरणार्थी आबादी सार्वजनिक सेवाओं, रोजगार, आवास और स्वास्थ्य देखभाल पर अतिरिक्त बोझ डालती है, विशेषकर पहले से संसाधनों की कमी से जूझ रहे क्षेत्रों में।
- **सामाजिक तनाव:** नौकरियों और संसाधनों के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा स्थानीय आबादी में असंतोष उत्पन्न कर सकती है, जिससे सामाजिक सौहार्द प्रभावित होता है।
- **कूटनीतिक संवेदनशीलता:** शरणार्थियों से जुड़े मुद्दे म्यांमार और बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को जटिल बना सकते हैं।

संतुलित नीति दृष्टिकोण:

- एक राष्ट्रीय शरणार्थी कानून बनाना, जो शरणार्थियों और आर्थिक प्रवासियों के बीच भेद करे और मानवीय व्यवहार सुनिश्चित करे।
- UNHCR के साथ समन्वय करना, ताकि पहचान पंजीकरण और बुनियादी अधिकारों तक पहुँच सुनिश्चित की जा सके।
- क्षेत्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करना, विशेषकर सार्क (SAARC) और बिम्सटेक (BIMSTEC) जैसे मंचों के माध्यम से।
- मानवीय दायित्वों और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन बनाना, नियंत्रित प्रवेश, निगरानी और एकीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से।

भारत को एक अधिकार-आधारित और सुरक्षा-सचेत शरणार्थी नीति अपनानी चाहिए, ताकि वह अपनी ऐतिहासिक शरण परंपरा को बनाए रखते हुए राष्ट्रीय हितों की भी रक्षा कर सके।

Chronicle ias

प्रश्न 8. भारतीय उपमहाद्वीप में भूकंप के कारण और प्रभाव क्या हैं?

उत्तर: भारतीय उपमहाद्वीप भारतीय और यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेटों के संगम पर स्थित है, जिससे यह क्षेत्र भूकंपीय गतिविधियों के लिए अत्यंत संवेदनशील बनता है। भूकंपों ने कई क्षेत्रों में व्यापक विनाश और गंभीर तबाही मचाई है, जिसके परिणामस्वरूप जीवन और संपत्ति का भारी नुकसान हुआ।

भूकंप के कारण:

- **प्लेट टेक्टोनिक गतिविधियाँ:** भारतीय प्लेट और यूरेशियन प्लेट के टकराव के कारण हिमालय का निर्माण हुआ और इस क्षेत्र में बार-बार भूकंपीय गतिविधियाँ होती रहती हैं।
- **अंतःप्लेट गतिविधियाँ:** लातूर (महाराष्ट्र) और कोयना (महाराष्ट्र) जैसे क्षेत्रों में भारतीय प्लेट के भीतर प्राचीन फॉल्ट लाइनों के पुनः सक्रिय होने के कारण विनाशकारी भूकंप आए हैं।
- **मानवजनित कारण:** जलाशयों के निर्माण (जैसे कोयना बांध), खनन, गहरी ड्रिलिंग और फ्रैकिंग जैसी गतिविधियाँ भूगर्भीय दबाव को असंतुलित कर स्थानीय भूकंप उत्पन्न कर सकती हैं।
- **सबडक्शन और स्लिप जोन:** पूर्वोत्तर भारत और अंडमान-निकोबार खाई के साथ स्थित सबडक्शन जोन और प्लेट्स के अचानक फिसलने के कारण उच्च तीव्रता वाले भूकंप और सूनामी उत्पन्न होते हैं (जैसे 2004 की हिंद महासागर सूनामी)।

भूकंप के प्रभाव:

- **जीवन और आजीविका की हानि:** घनी आबादी वाले या कमजोर निर्माण वाले क्षेत्रों में हजारों लोगों की मृत्यु हो सकती है या घायल हो सकते है।
- **अवसंरचना की हानि:** इमारतों, सड़कों, पुलों और बांधों जैसे महत्वपूर्ण ढांचों को भारी क्षति पहुँचती है, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ बाधित होती हैं।
- **द्वितीयक आपदाएँ:** भूकंप भूस्खलन (विशेषकर हिमालयी क्षेत्र में), सूनामी और गैस पाइपलाइन फटने से आग जैसी अन्य आपदाओं को भी जन्म देते हैं।
- **मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव:** बचे हुए लोग अक्सर मानसिक आघात, विस्थापन और सामाजिक नेटवर्क के विघटन का सामना करते हैं।

भविष्य में भूकंपों के प्रभाव को कम करने के लिए क्षेत्र निर्धारण नियमों, भूकंप-रोधी अवसंरचना, पूर्व चेतावनी प्रणालियों और सामुदायिक तैयारी को अपनाना अनिवार्य है।

Chronicle ias

प्रश्न 9. भारत के समुद्री संसाधनों के आर्थिक और सामरिक महत्व का मूल्यांकन करें।

उत्तर: भारत, जिसकी तटरेखा 7,500 किलोमीटर से अधिक है और विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) 20 लाख वर्ग किलोमीटर से अधिक है, असीम समुद्री संसाधनों का स्वामी है, जो आर्थिक विकास और रणनीतिक सुरक्षा दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

आर्थिक महत्व:

- **ऊर्जा संसाधन:** भारत के विशेष आर्थिक क्षेत्र में मुम्बई हाई और कृष्णा-गोदावरी बेसिन जैसे क्षेत्रों में तेल और प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार हैं, जो ऊर्जा सुरक्षा में सहायक हैं।
- **समुद्री अर्थव्यवस्था और आजीविका:** मत्स्य क्षेत्र 1.4 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है और निर्यात व खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
- **समुद्री व्यापार और बंदरगाह अवसंरचना:** भारत के 90% से अधिक व्यापार (मात्रा के आधार पर) समुद्र मार्ग से होता है; 'सागरमाला' जैसी पहलें तटीय संपर्क और लॉजिस्टिक्स को सुदृढ़ कर रही हैं।
- **ब्लू इकोनॉमी पहल:** समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग पर जोर दिया जा रहा है ताकि समावेशी विकास और पर्यावरणीय संतुलन सुनिश्चित किया जा सके।

रणनीतिक महत्व:

- **भू-राजनीतिक स्थिति:** भारतीय महासागर में भारत का रणनीतिक स्थान मलक्का जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर प्रभाव स्थापित करने में मदद करता है।
- **समुद्री सुरक्षा परिसंपत्तियाँ:** अंडमान और निकोबार द्वीप समूह निगरानी और नौसेना तैनाती के लिए रणनीतिक चौकियों के रूप में कार्य करते हैं।
- **सागर सिद्धांत (SAGAR Doctrine):** भारत 'क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास' (Security and Growth for All in the Region) को बढ़ावा देकर चीन की बढ़ती समुद्री उपस्थिति के बीच एक 'नेट सुरक्षा प्रदाता' की भूमिका निभा रहा है।

भारत के समुद्री संसाधन आर्थिक विकास और रणनीतिक स्वायत्तता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, अतः उनके सतत और सुरक्षित उपयोग को सुनिश्चित करना दीर्घकालिक राष्ट्रीय हित में है।

Chronicle ias

प्रश्न 10. ऐतिहासिक और प्राकृतिक कारकों ने भारतीय उपमहाद्वीप में सीमाओं के विकास को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर: भारतीय उपमहाद्वीप में सीमाओं का विकास प्राकृतिक और ऐतिहासिक दोनों कारकों से गहराई से प्रभावित रहा है। ये सीमाएँ, जो अक्सर गतिशील और विवादित रही हैं, सदियों से भारत की राजनीतिक सीमाओं, रणनीतिक चिंताओं और सांस्कृतिक क्षेत्रों को आकार देती आई हैं।

सीमाओं को प्रभावित करने वाले प्राकृतिक कारक:

हिमालय एक प्राकृतिक अवरोधक के रूप में:

- हिमालय पर्वतमाला ने ऐतिहासिक रूप से उपमहाद्वीप को केंद्रीय एशियाई आक्रमणों से काफी हद तक सुरक्षित रखा।
- फिर भी, खैबर और बोलन दर्रों जैसे मार्गों ने आक्रमणकारियों और प्रवासियों (जैसे आर्य, कुषाण, मुगल) के लिए प्रवेश द्वार का कार्य किया।

रेगिस्तान और शुष्क क्षेत्र:

- थार रेगिस्तान ने भारत और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों के बीच प्राकृतिक बफर का काम किया,
- किंतु यह अभेद्य नहीं रहा- सिंध और पंजाब के माध्यम से बार-बार आक्रमण हुए।

नदियाँ और मैदान:

- सिंधु और गंगा नदी प्रणालियों ने सांस्कृतिक और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा दिया,
- लेकिन इन्हीं ने कुछ क्षेत्रों में सीमाओं का निर्माण भी किया (जैसे, पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों के बीच)।
- ब्रह्मपुत्र जैसी नदियाँ पूर्वोत्तर में भू-आर्थिक अलगाव का कारण बनीं, जिससे असम और अरुणाचल प्रदेश में सीमाओं का समेकन प्रभावित हुआ।

तटीय भूगोल और द्वीप समूह:

- भारत की लंबी तटरेखा ने समुद्री प्रभाव और उपनिवेशीकरण (जैसे यूरोपीय व्यापारिक केंद्रों की स्थापना) के लिए मार्ग प्रशस्त किया।
- अंडमान-निकोबार और लक्षद्वीप द्वीप समूह ने बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में भारत की समुद्री सीमाओं का विस्तार किया।

Chronicle ias

सीमाओं को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक कारक:

प्राचीन साम्राज्य और सांस्कृतिक प्रसार:

- मौर्य और गुप्त जैसे साम्राज्यों ने सीमाओं का विस्तार कर विशाल क्षेत्रों का एकीकरण किया।
- फिर भी, उन्होंने प्राय: पूर्वोत्तर और दक्षिणी सिरे को पूरी तरह से शामिल नहीं किया, जो प्रारंभिक सांस्कृतिक सीमाओं को दर्शाता है।

मध्यकालीन आक्रमण और इस्लामी शासन:

- उत्तर-पश्चिम से हुए बार-बार के आक्रमणों ने राजनीतिक सीमाओं को सख्त और परिवर्तनशील बना दिया (जैसे दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य)।
- पंजाब और उत्तर-पश्चिम जैसे सीमावर्ती क्षेत्र संघर्ष और मिश्रित संस्कृति के केंद्र बन गए।

औपनिवेशिक प्रभाव:

- ब्रिटिश, फ्रांसीसी, पुर्तगाली और डच शक्तियों ने तटीय और समुद्री सीमाओं को आकार दिया।
- डुरंड रेखा (1893) और मैकमहोन रेखा (1914) जैसी औपनिवेशिक सीमाएँ आज भी भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन विवादों का कारण हैं।

1947 का विभाजन:

- नए राजनीतिक सीमाओं (भारत-पाकिस्तान, बाद में बांग्लादेश) का निर्माण हुआ, जो अक्सर जातीय, भाषाई और सांस्कृतिक रेखाओं को विभाजित करते हुए खींची गईं।
- इसने बड़े पैमाने पर विस्थापन और दीर्घकालिक संघर्ष क्षेत्रों को जन्म दिया, विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर और पंजाब में।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद संघर्ष और समझौते:

- चीन (1962) और पाकिस्तान (1947, 1965, 1971, 1999) के साथ हुए युद्धों ने सीमाओं के प्रबंधन और धारणाओं को प्रभावित किया।
- सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे का विकास, सैन्य उपस्थिति और सीमावर्ती विवाद (जैसे LOC, LAC) इन्हीं ऐतिहासिक तनावों के परिणाम हैं।

भारत की सीमाओं का विकास स्थिर नहीं रहा है; यह भूगोल और इतिहास के बीच गतिशील अंत: क्रिया का परिणाम है। प्राकृतिक विशेषताओं ने उपमहाद्वीप की रक्षा भी की और उसे आक्रांताओं के लिए सुलभ भी बनाया, जबकि ऐतिहासिक घटनाओं-साम्राज्य, आक्रमण, उपनिवेशवाद और युद्धों- ने राजनीतिक और सांस्कृतिक सीमाओं को तराशा। इस विकास को समझना आज भारत की रणनीतिक चिंताओं और सीमावर्ती जटिलताओं को समझने के लिए आवश्यक है।

Chronicle ias

(खण्ड-II)

प्रश्न 11. मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ और नागर शैलियों की विशेषताओं की तुलना करें। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से उदाहरण लेकर अपने उत्तर को स्पष्ट करें।

उत्तरः द्रविड़ और नागर शैलियाँ भारत में मंदिर वास्तुकला के दो प्रमुख विद्यालयों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो अलग-अलग क्षेत्रीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों में विकसित और समृद्ध हुईं।

- ये शैलियाँ न केवल संरचनात्मक विशेषताओं में भिन्न हैं, बल्कि अपने-अपने क्षेत्रों की कलात्मक और आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों को भी प्रतिबिंबित करती हैं।

द्रविड़ और नागर शैली की तुलनाः		
विशेषता	**द्रविड़ शैली**	**नागर शैली**
क्षेत्र	मुख्यतः दक्षिण भारत (तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश)	मुख्यतः उत्तर भारत (उत्तर प्रदेश, ओडिशा, मध्य प्रदेश, गुजरात)
शिखर (विमान)	इसे विमान कहा जाता है। पिरामिड आकारनुमा, जिसमें क्रमशः छोटे तल (तल) होते हैं।	इसे शिखर कहा जाता है- वक्राकार या मधुमक्खी छत्ते के आकार का
आधार मंच (जगति)	सामान्यतः अनुपस्थित या साधारण	प्रायः ऊँचे मंच या जगति पर निर्मित
प्रवेश द्वार (गोपुरम)	अत्यधिक महत्वपूर्ण संरचना, विशेषकर बाद के मंदिरों में (जैसे मीनाक्षी मंदिर)	सामान्यतः छोटा या कम प्रमुख
गर्भगृह (गर्भगृह)	बड़े मंदिरों में गर्भगृह परिक्रमा पथ से घिरा होता है	प्रायः परिक्रमा पथ नहीं होता
मंडप (स्तंभयुक्त सभागार)	अनेक और अधिक भव्य मंडप होते है।	मंडप होते हैं, लेकिन आमतौर पर कम महत्वपूर्ण
मूर्तिकला विवरण	दीवारों और छतों पर उत्कृष्ट नक्काशी, मुख्य रूप से पौराणिक कथाओं पर आधरित	शिखर और बाहरी दीवारों पर अलंकरण, ऊर्ध्वाधर रेखाओं का उपयोग
सहायक मंदिर	एक ही परिसर में स्थित	कभी-कभी मुख्य मंदिर से अलग, स्वतंत्र
प्रयुक्त सामग्री	ग्रेनाइट और अन्य कठोर पत्थर	बलुआ पत्थर, संगमरमर और अन्य कोमल पत्थर

Chronicle ias

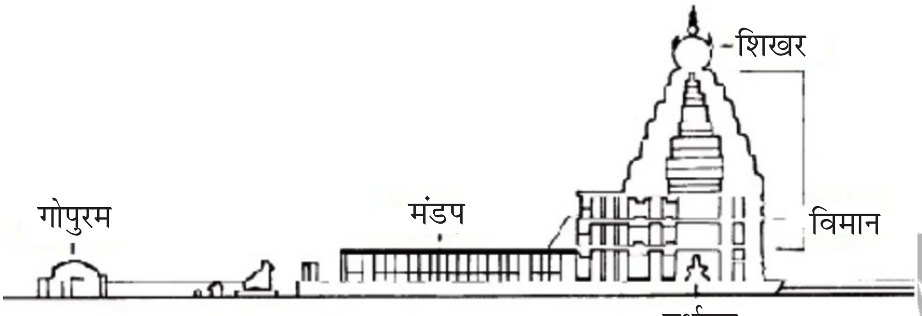

द्रविड शैली की वास्तुकला

नागर शैली की मूल बातें

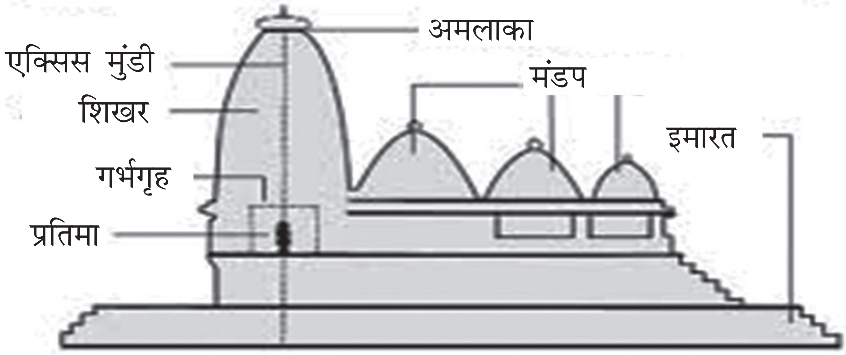

द्रविड़ शैली के मंदिरों के उदाहरण

- **बृहदीश्वर मंदिर, तंजावुर (तमिलनाडु)** – राजराजा चोल प्रथम द्वारा निर्मित, विशाल विमान और अक्षीय संरेखण।
- **शोर मंदिर, महाबलीपुरम (तमिलनाडु)** – पल्लवों के तहत प्रारंभिक उदाहरण, शिलाखंडित और संरचनात्मक तत्वों का संयोजन।
- **मीनाक्षी मंदिर, मदुरै** – विशाल गोपुरम और मूर्तिकला समृद्धि के लिए प्रसिद्ध।
- **वीरुपाक्ष मंदिर, पट्टडकल (कर्नाटक)** – प्रारंभिक चालुक्य काल का द्रविड़ शैली का उदाहरण।

नागर शैली के मंदिरों के उदाहरण:

- **कंदारिया महादेव मंदिर, खजुराहो (मध्य प्रदेश)** – ऊँचा वक्राकार शिखर और शृंगारिक मूर्तियाँ।
- **सूर्य मंदिर, कोणार्क (ओडिशा)** – नागर शैली का कलिंग उपप्रकार, रथ के आकार की संरचना और सूक्ष्म नक्काशी।
- **लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर (ओडिशा)** – परिपक्व नागर शैली का उदाहरण, ऊर्ध्वाधरता पर बल।
- **मुक्तेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर** – अपने अलंकृत तोरण और मूर्तिकला सुंदरता के लिए प्रसिद्ध।

द्रविड़ और नागर शैलियाँ केवल वास्तुकला के ढांचे नहीं हैं, बल्कि अपने-अपने क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान भी हैं।

जहाँ द्रविड़ शैली भव्य गोपुरमों और पिरामिडाकार विमानों पर बल देती है, वहीं नागर शैली ऊँचे वक्राकार शिखरों के लिए जानी जाती है।

दोनों शैलियाँ मिलकर भारतीय मंदिर वास्तुकला की विविधता और समृद्धि को दर्शाती हैं, जो भूगोल, राजवंशों और भक्ति के प्रभाव से आकार ली गई हैं।

प्रश्न 12. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सुभाष चंद्र बोस के योगदान पर चर्चा करें। क्या स्वतंत्रता के प्रति उनका दृष्टिकोण गांधी और कांग्रेस से अलग था?

उत्तर: सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे गतिशील और क्रांतिकारी नेताओं में से एक थे। उनके योगदानों को उनके उग्र राष्ट्रवाद, करिश्माई नेतृत्व और भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के प्रति अडिग प्रतिबद्धता ने चिह्नित किया।

हालाँकि वे महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ स्वतंत्र भारत के लक्ष्य को साझा करते थे, परंतु उनके तरीके और विचारधारा काफी भिन्न थे।

सुभाष चंद्र बोस के योगदान:

भारतीय राष्ट्रवाद को पुनर्जीवित करना:

- 1930 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेता रहे और दो बार (1938-1939) अध्यक्ष चुने गए।
- कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज) का समर्थन किया, जबकि उस समय कांग्रेस नेतृत्व अधिराज्य स्थिति (Dominion Status) पर विचार कर रहा था।

फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन (1939):

- वैचारिक मतभेदों के कारण कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की, ताकि उग्र तत्वों को एकत्रित कर स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया जा सके।

अंतरराष्ट्रीय कूटनीति:

- बोस ने भारत को स्वतंत्र कराने के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया। उन्होंने विश्वास किया कि "दुश्मन का दुश्मन मित्र होता है।"
- उन्होंने जर्मनी और बाद में जापान का दौरा कर भारत की आजादी के लिए सहयोग माँगा।

आजाद हिंद फौज (INA) का गठन:

- बोस ने दक्षिण-पूर्व एशिया में जापानियों की सहायता से आजाद हिंद फौज को पुनर्जीवित किया।
- उन्होंने विदेशों में हजारों भारतीयों को सैन्य संघर्ष में शामिल होने के लिए प्रेरित किया और नारा दिया- "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"
- पूर्वोत्तर भारत में INA के सैन्य अभियानों ने भले ही अंतिम सफलता प्राप्त न की हो, लेकिन इसने देश में राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रज्वलित कर दिया।

Chronicle ias

विरासत और प्रभाव:

- 1945-46 के INA (लाल किले) मुकदमों ने देशव्यापी आंदोलन भड़काया और ब्रिटिश शासन की दृढ़ता को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- बोस की विचारधारा और बलिदान भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

गांधी और कांग्रेस से भिन्नता:		
आयाम	**बोस का दृष्टिकोण**	**गांधी और कांग्रेस का दृष्टिकोण**
विचारधारा	उग्र राष्ट्रवाद, अधिनायकवादी समाजवाद	अहिंसक राष्ट्रवाद, लोकतांत्रिक मूल्य
तरीके	सशस्त्र संघर्ष और अंतरराष्ट्रीय गठबंधन	अहिंसा, नागरिक अवज्ञा, सत्याग्रह
ब्रिटिश शासन के प्रति दृष्टिकोण	किसी भी माध्यम से ब्रिटिश शासन को तत्काल और पूर्ण रूप से उखाड़ फेंकना	क्रमिक और संवाद आधारित
द्वितीय विश्व युद्ध पर रुख	ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का विरोध, धुरी शक्तियों से सहयोग माँगना	कुछ शर्तों पर ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का समर्थन
भारत का भविष्य दृष्टिकोण	समाजवादी, औद्योगीकृत, शक्तिशाली केंद्रीय सत्ता	विकेंद्रीकृत, ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था (गांधीवादी आदर्श)

सुभाष चंद्र बोस का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान अत्यंत महान था। उनकी दृष्टि संवैधानिक तरीकों के प्रति अधीरता और प्रत्यक्ष कार्रवाई व अंतरराष्ट्रीय समर्थन में विश्वास को दर्शाती है। जहाँ गांधीजी ने नैतिक बल और जन आंदोलनों के माध्यम से जनसमूह को प्रेरित किया, वहीं बोस ने उन्हें क्रियाशीलता और बलिदान के माध्यम से प्रेरित किया। दोनों ने भिन्न विचारधाराओं और तरीकों के बावजूद भारत की स्वतंत्रता की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई।

Chahal ias

प्रश्न 13. वर्साय की संधि (1919) और द्वितीय विश्व युद्ध में इसकी भूमिका का विश्लेषण करें।

उत्तर: वर्साय संधि (1919) ने औपचारिक रूप से प्रथम विश्व युद्ध का अंत किया, लेकिन इसके कठोर प्रावधानों ने द्वितीय विश्व युद्ध के बीज बो दिए। यह संधि मित्र राष्ट्रों और जर्मनी के बीच हस्ताक्षरित हुई थी, जिसमें मुख्य भूमिका फ्रांस, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ने निभाई थी। शांति स्थापित करने के बजाय, इस संधि ने विशेष रूप से जर्मनी में आक्रोश, आर्थिक कठिनाइयों और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दिया।

वर्साय संधि के मुख्य प्रावधान:

युद्ध दोष धारा (अनुच्छेद 231):

- प्रथम विश्व युद्ध के लिए संपूर्ण दोष जर्मनी पर डाला गया, जिससे राष्ट्रीय गर्व को गहरा आघात पहुँचा।

युद्ध क्षतिपूर्ति (Reparations):

- जर्मनी पर 132 अरब स्वर्ण अंकों (Gold Marks) का भारी वित्तीय बोझ डाला गया, जिसके कारण 1920 के दशक में महाविनियोजन (Hyperinflation) और आर्थिक पतन हुआ।

सैन्य प्रतिबंध:

- जर्मन सेना को केवल 100,000 सैनिकों तक सीमित किया गया, वायु सेना और पनडुब्बियों पर प्रतिबंध लगा, तथा राइनलैंड क्षेत्र का सैन्यीकरण निषिद्ध किया गया।

क्षेत्रीय हानि:

- जर्मनी ने अपनी 13% भूमि और सभी विदेशी उपनिवेश खो दिए।
- एल्सेस-लोरेन जैसे क्षेत्र फ्रांस को लौटा दिए गए।

नए राष्ट्रों का निर्माण:

- मध्य और पूर्वी यूरोप में सीमाओं का पुनर्निर्धारण हुआ, जिससे अस्थिर राष्ट्र और अल्पसंख्यक तनाव उत्पन्न हुए (जैसे चेकोस्लोवाकिया में सुडेटन जर्मन)।

द्वितीय विश्व युद्ध में भूमिका:

जर्मन आक्रोश और राष्ट्रवाद:

- संधि को "डिक्टेट" (थोपे गए शांति समझौते) के रूप में देखा गया, जिससे बदले की भावना और आक्रोश बढ़ा।

एडोल्फ हिटलर का उदय:

- हिटलर ने संधि के अपमान को भुनाया, जर्मन गौरव और क्षेत्रीय पुनःप्राप्ति का वादा कर लोकप्रिय समर्थन हासिल किया।

वाईमार गणराज्य का कमजोर होना:

- आर्थिक संकट और राष्ट्रीय अपमान ने लोकतांत्रिक शासन की वैधता को क्षति पहुँचाई और नाजीवाद के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

वर्साय संधि ने स्थायी शांति स्थापित करने के बजाय उग्रवाद, प्रतिशोध और अंततः 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रकोप के लिए आधार तैयार किया।

Chronicle ias

प्रश्न 14. भारत में लैंगिक असमानता को दूर करने में महिला संगठनों की भूमिका का मूल्यांकन करें। कानूनी और नीतिगत उपायों ने महिला सशक्तीकरण में किस हद तक योगदान दिया है?

उत्तर: ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2024 के अनुसार, भारत 146 देशों में 129वें स्थान पर है और उसने अब तक केवल 64.1% लैंगिक अंतर को पाटने में सफलता प्राप्त की है। जेंडर इनइक्वालिटी इंडेक्स 2022 में भारत का स्थान 193 देशों में 108वां रहा, जो शिक्षा और राजनीतिक सशक्तिकरण में जारी असमानताओं को दर्शाता है।

महिला संगठनों ने, कानूनी और नीतिगत प्रयासों के साथ मिलकर, संरचनात्मक भेदभाव को चुनौती देने, सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और लैंगिक न्याय सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत में लैंगिक असमानता को दूर करने में महिला संगठनों की भूमिका:

वकालत और कानूनी सुधार:

- सेवा (SEWA), ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक वीमेनज एसोसिएशन (AIDWA), और नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन वीमेन (NFIW) जैसे संगठनों ने निम्नलिखित प्रगतिशील कानूनों के लिए सक्रिय लॉबिंग की:
  - घरेलू हिंसा अधिनियम (2005)
  - कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न से संरक्षण अधिनियम (2013)

जमीनी स्तर पर लामबंदी:

- स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और सामूहिक पहलों ने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की वित्तीय समावेशन और आत्मनिर्भरता को बढ़ाया।
- उदाहरण: केरल में कुडुंबश्री मिशन।

जागरूकता और शिक्षा अभियान:

- माहवारी स्वच्छता, बालिका शिक्षा, दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा जैसे विषयों पर अभियानों ने जागरूकता बढ़ाई और सामाजिक मान्यताओं को बदलने में मदद की।

संकट सहायता और पुनर्वास:

- स्नेही, सखी, और जागोरी जैसे एनजीओ पीड़ित महिलाओं को आश्रय, कानूनी सहायता और परामर्श सेवाएँ प्रदान करते हैं।

कानूनी और नीतिगत उपायों का योगदानः

संवैधानिक प्रावधानः

- अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार), अनुच्छेद 15 (भेदभाव का निषेध), अनुच्छेद 16 (रोजगार में समान अवसर)। ये सभी लैंगिक समानता की आधारशिला रखते हैं।

कानूनी उपायः

- मातृत्व लाभ अधिनियम (2017), बाल विवाह निषेध अधिनियम (2006), पीसीपीएनडीटी अधिनियम (1994) जैसे कानून महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए बनाए गए हैं।

नीतिगत पहलः

- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, पोषण अभियान, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना जैसी योजनाएँ स्वास्थ्य, शिक्षा और गरिमा के मुद्दों को लक्षित करती हैं।

राजनीतिक भागीदारीः

- 73वें और 74वें संविधान संशोधन के तहत स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण दिया गया है, जिससे उनकी राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व में वृद्धि हुई है।
- 106वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2023 के तहत लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली विधानसभा में महिलाओं के लिए 33% सीटों का आरक्षण किया गया है।

महिला संगठन बदलाव के सशक्त वाहक रहे हैं, वहीं कानूनी और नीतिगत उपायों ने लैंगिक न्याय को संस्थागत रूप प्रदान किया है। हालाँकि, कार्यान्वयन की कमजोरियाँ और गहराई से स्थापित पितृसत्ता अब भी प्रगति में बाधा डालती हैं।

वास्तविक महिला सशक्तिकरण के लिए कानूनी सुधार, सामाजिक बदलाव और संस्थागत समर्थन का समन्वित प्रयास आवश्यक है।

Chronicle ias

प्रश्न 15. इटली में फासीवाद तथा जर्मनी और विश्व में नाजीवाद के उदय और प्रभाव की तुलना करें ।

उत्तरः इटली में फासीवाद और जर्मनी में नाजीवाद का उदय अन्तरयुद्ध काल के दौरान यूरोप में अधिनायकवाद की ओर एक नाटकीय बदलाव का प्रतीक था। हालाँकि दोनों विचारधाराएँ अतिराष्ट्रवाद, साम्यवाद-विरोध और सैन्यवाद में निहित थीं, लेकिन इनकी अभिव्यक्ति और वैश्विक प्रभाव में उल्लेखनीय अंतर रहा।

इटली में फासीवाद का उदय

1. **प्रथम विश्व युद्ध के बाद आर्थिक संकटः**
   - इटली में मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और सामाजिक अशांति व्याप्त थी।
   - कमजोर लोकतांत्रिक सरकारें स्थिरता प्रदान करने में विफल रहीं।
2. **मुसोलिनी का उदय (1922):**
   - बेनिटो मुसोलिनी ने राष्ट्रवादी भावना और साम्यवाद के भय का लाभ उठाया।
   - रोम पर मार्च के बाद मुसोलिनी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।
3. **विचारधाराः**
   - राज्य की सर्वोच्चता, राष्ट्रवाद और केंद्रीय सत्ता के प्रति आज्ञाकारिता पर बल दिया गया।
   - नारा था - ''राज्य के भीतर सब कुछ, राज्य के बाहर कुछ नहीं।''

जर्मनी में नाजीवाद का उदय

1. **वर्साय संधि और आर्थिक संकटः**
   - कठोर क्षतिपूर्ति, क्षेत्रीय हानियाँ और अत्यधिक मुद्रास्फीति ने जन असंतोष को जन्म दिया।
   - 1929 की महामंदी ने संकट को और गहरा कर दिया।

Chronicle ias

2. **हिटलर का उदय (1933):**

- एडोल्फ हिटलर ने नाजी पार्टी के माध्यम से जर्मन गौरव और अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का वादा किया।
- 'एनाब्लिंग एक्ट' (Enabling Act) के माध्यम से हिटलर को तानाशाही शक्तियाँ प्राप्त हुईं।
- ''लेबेन्सराउम'' (Lebensraum – जीवन क्षेत्र) नाजी जर्मनी की आक्रामक विदेश नीति का मुख्य आधार बना।

3. **विचारधारा:**

- नस्लीय शुद्धता, आर्य जाति की श्रेष्ठता, यहूदी-विरोध और विस्तारवाद पर आधारित थी।
- जर्मन नस्ल की श्रेष्ठता के मिथकों का प्रचार किया गया।

तुलनात्मक प्रभाव		
पहलू	**फासीवाद (इटली)**	**नाजीवाद (जर्मनी)**
आंतरिक प्रभाव	असहमति का दमन, राज्य का नियंत्रण	पूर्ण अधिनायकवादी शासन, नरसंहार (होलोकॉस्ट)
विदेश नीति	विस्तारवादी (इथियोपिया, अल्बानिया पर आक्रमण)	आक्रामक सैन्यवाद (पोलैंड, सोवियत संघ पर आक्रमण)
द्वितीय विश्व युद्ध में भूमिका	जर्मनी का सहयोगी, द्वितीयक भूमिका	द्वितीय विश्व युद्ध का प्रमुख आरंभकर्ता
वैश्विक प्रभाव	अन्य फासीवादी आंदोलनों को प्रेरणा	भारी मानव हानि और होलोकॉस्ट का कारण
शासन का अंत	1943 में पतन (मित्र राष्ट्रों का आक्रमण)	1945 में पतन (हिटलर की आत्महत्या और नाजी हार)

हालाँकि फासीवाद और नाजीवाद दोनों समान संकटों की परिस्थितियों में उभरे, फिर भी नाजीवाद ने अपनी नरसंहारकारी नीतियों और द्वितीय विश्व युद्ध में निर्णायक भूमिका के कारण कहीं अधिक विनाशकारी वैश्विक प्रभाव डाला। ये दोनों विचारधाराएँ अधिनायकवाद, असहिष्णुता और निरंकुश सत्ता के खतरों के प्रति एक स्थायी चेतावनी हैं।

Chronicle ias

प्रश्न 16 भारतीय समाज की उन प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा करें जो इसकी विविधता में एकता में योगदान करती हैं। सांस्कृतिक परंपराओं ने भारत की सामाजिक संरचना को किस प्रकार आकार दिया है?

उत्तरः भारत को अक्सर ''विविधता में एकता'' के लिए सराहा जाता है, एक ऐसा वाक्यांश जो इसकी समृद्ध सांस्कृतिक, भाषायी, धार्मिक और जातीय विविधताओं के एकीकृत राष्ट्रीय ढांचे में सह-अस्तित्व को अभिव्यक्त करता है।

अपार विविधताओं के बावजूद, भारतीय समाज ने एक मिश्रित संस्कृति को बनाए रखा है, जो एकता, सद्भाव और जिजीविषा को बढ़ावा देता है।

भारतीय समाज की वे प्रमुख विशेषताएँ जो विविधता में एकता में योगदान देती हैं:

1. **धार्मिक सहिष्णुता और बहुलवादः**
   - भारत हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और अन्य अनेक धार्मिक समुदायों का घर है।
   - ''सर्व धर्म समभाव'' (सभी धर्मों के प्रति समान आदर) की भावना एकता को सुदृढ़ करती है।

2. **भाषायी विविधताः**
   - भारत में 22 अनुसूचित भाषाएँ और 19,500 से अधिक बोलियाँ (जनगणना 2011) प्रचलित हैं।
   - भाषायी पहचान के प्रति आपसी सम्मान भारतीय संघवाद की एक विशेषता है।
   - त्रिभाषा सूत्र और अंग्रेजी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाने से भी एकता को बल मिला है।

3. **भौगोलिक एकताः**
   - हिमालय जैसी पर्वतमालाएँ और गंगा जैसी नदियाँ आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं।
   - कुंभ मेले जैसे अखिल भारतीय तीर्थ यात्राएँ और पर्व एक साझा सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा देते हैं।

4. **त्योहार और परंपराएँः**
   - दीपावली, ईद, होली, क्रिसमस जैसे पर्व विभिन्न समुदायों के बीच सहभागिता और आपसी संबंधों को सुदृढ़ करते हैं।

5. संवैधानिक ढांचाः

- भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्षता, समानता और सांस्कृतिक अधिकारों (अनुच्छेद 29 और 30) को बढ़ावा देता है, जिससे विविधता के संरक्षण और उत्सव को सुनिश्चित किया जाता है।

सांस्कृतिक परंपराएँ और सामाजिक संरचनाः

1. जाति और समुदाय व्यवस्थाः

- यद्यपि जाति व्यवस्था ने समाज में विभाजन उत्पन्न किया, परंतु इसने व्यावसायिक विशेषीकरण के माध्यम से आर्थिक पारस्परिक निर्भरता को भी बढ़ावा दिया।

2. संयुक्त परिवार और कुटुंब संबंधः

- मजबूत पारिवारिक नेटवर्क सामाजिक सुरक्षा तथा सांस्कृतिक परंपराओं के पीढ़ी दर पीढ़ी संचरण को सुनिश्चित करते हैं।

3. दार्शनिक परंपराएँः

- ''वसुधैव कुटुंबकम'' ("समस्त विश्व एक परिवार है") जैसे सिद्धांत समावेशिता को प्रोत्साहित करते हैं।

4. समन्वित परंपराएँः

- भक्ति आंदोलन और सूफी परंपराओं ने धार्मिक भेदभाव को पाटते हुए सौहार्द्र और एकता की भावना को बढ़ाया।

भारत की एकता समानता में नहीं, बल्कि विविधता को अपनाने में निहित है। सांस्कृतिक परंपराओं ने न केवल भारत की सामाजिक संरचना को समृद्ध किया है, बल्कि सामूहिक सह-अस्तित्व की भावना को भी पोषित किया है, जिससे भारत आज वैश्विक स्तर पर एक बहुलतावादी लोकतंत्र का उत्कृष्ट उदाहरण बन गया है।

Chronicle ias

प्रश्न 17. भारत में उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों पर चर्चा कीजिए। महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्रों के उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: उद्योगों की अवस्थिति का निर्धारण भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक-राजनीतिक कारकों के मिश्रण द्वारा होता है। भारत में ये कारक वैश्विक प्रवृत्तियों के समान हैं, लेकिन इसकी विशिष्ट जनसांख्यिकीय और विकासात्मक परिस्थितियों से प्रभावित हैं।

उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकः

1. **कच्चे माल की उपलब्धताः** संसाधनों की निकटता से उत्पादन लागत कम होती है।

- **भारतः** जमशेदपुर (लौह एवं इस्पात उद्योग) को कोयला और लौह अयस्क भंडार से निकट स्थित होने का लाभ मिला।
- **वैश्विकः** जर्मनी का रूहर घाटी क्षेत्र भारी उद्योगों के विकास को ध्यान मे रखते हुए कोयला खानों के आसपास विकसित हुआ।

2. **ऊर्जा आपूर्तिः** उद्योगों के लिए विश्वसनीय और सस्ती बिजली आवश्यक है।

- **भारतः** कोरबा (छत्तीसगढ़) में ताप विद्युत संयंत्रों की उपलब्धता के कारण एल्युमिनियम उद्योग फला-फूला।
- **वैश्विकः** आइसलैंड में जलविद्युत ऊर्जा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने से एल्युमिनियम रिफाइनरियों का विकास हुआ।

3. **परिवहन और संपर्क सुविधाः** कच्चे माल के आगमन और उत्पादों के निर्यात के लिए कुशल लॉजिस्टिक्स आवश्यक हैं।

- **भारतः** मुंबई-पुणे कॉरिडोर में रेल, सड़क और बंदरगाह का उत्कृष्ट नेटवर्क है।
- **वैश्विकः** ग्रेट लेक्स क्षेत्र (अमेरिका-कनाडा) अंतर्देशीय जलमार्गों और रेलवे नेटवर्क से लाभान्वित है।

4. **बाजार के निकटताः** उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योग बड़े बाजारों के पास पनपते हैं।

- **भारतः** दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में एफएमसीजी और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों का विकास हुआ है।
- **वैश्विकः** न्यूयॉर्क फैशन और वित्त का प्रमुख केंद्र है, क्योंकि यहाँ विशाल शहरी मांग मौजूद है।

5. **श्रम बल की उपलब्धताः** कुशल अथवा सस्ता श्रम स्थापन निर्णय को प्रभावित करता है।

- **भारतः** तिरुपुर (तमिलनाडु) वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।
- **वैश्विकः** चीन का शेनझेन सस्ता और कुशल श्रम मिलने के कारण औद्योगिक केंद्र बना।

6. **सरकारी नीति और आधारभूत ढांचाः** विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) और कर प्रोत्साहन निवेश आकर्षित करते हैं।

- **भारतः** गुजरात औद्योगिक विकास निगम (GIDC) जैसे संस्थानों ने औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया।
- **वैश्विकः** सिंगापुर का जुरोंग औद्योगिक क्षेत्र नियोजित औद्योगिकीकरण का आदर्श उदाहरण है।

उद्योगों की अवस्थिति की रणनीतिक योजना लागत-कुशलता और प्रतिस्पर्धात्मकता सुनिश्चित करती है। संतुलित क्षेत्रीय योजना के माध्यम से भारत सफल वैश्विक औद्योगिक मॉडलों का अनुकरण कर समावेशी विकास प्राप्त कर सकता है।

Chronicle ias

प्रश्न 18. दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रमुख जल संसाधनों के वितरण का विश्लेषण करें। सीमापार जल विवाद क्षेत्रीय सहयोग को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तरः दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया विशाल जल संसाधनों से समृद्ध हैं, जिनका स्रोत हिमालय और तिब्बती पठार से निकलने वाली प्रमुख अंतरराष्ट्रीय नदियाँ हैं। इसके बावजूद, बढ़ती मांग, जलवायु परिवर्तन और भू-राजनीतिक तनावों के कारण जल संकट और विवाद तेजी से बढ़ रहे हैं।

प्रमुख जल संसाधनों का वितरणः

1. **दक्षिण एशियाः**

- **गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना (GBM) बेसिनः** तिब्बत से निकलती है और भारत, नेपाल तथा बांग्लादेश से होकर बहती है।
- **सिंधु नदीः** तिब्बत से निकलकर भारत और पाकिस्तान से होकर बहती है।
- **गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियांः** पूरी तरह भारत के भीतर बहती हैं, लेकिन राज्यों के बीच जल विवादों का कारण बनती हैं।
- **हिमनदी और मानसूनी निर्भरता** के कारण जल प्रवाह मौसमी और अस्थिर रहता है।

2. **दक्षिण-पूर्व एशियाः**

- **मेकांग नदीः** चीन से निकलकर म्यांमार, लाओस, थाईलैंड, कंबोडिया और वियतनाम से होकर बहती है।
- **सलवीन और इरावदी नदियांः** म्यांमार में प्रमुख जल स्रोत हैं।
- मानसून पर भारी निर्भरता और मौसमी विविधता जल आपूर्ति को प्रभावित करती है।

क्षेत्रीय सहयोग पर अंतरराष्ट्रीय जल विवादों का प्रभावः

- **भारत-पाकिस्तानः** सिंधु जल संधि (1960) विभिन्न युद्धों और विवादों के बावजूद बनी हुई है, लेकिन कश्मीर में जलविद्युत परियोजनाओं को लेकर तनाव है।
- **भारत-बांग्लादेशः** तीस्ता नदी जल बंटवारे को लेकर विवाद ने द्विपक्षीय संबंधों में खिंचाव पैदा किया है, हालांकि 1996 की गंगा जल संधि एक सकारात्मक उदाहरण है।
- **मेकांग बेसिनः** चीन द्वारा नदी के ऊपरी हिस्से में बांधों के निर्माण ने निचली धारा वाले देशों के साथ तनाव बढ़ाया है, जिससे कृषि उत्पादन और मत्स्य भंडार में गिरावट आई है।

अंतरराष्ट्रीय जल विवाद क्षेत्रीय कूटनीति में तनाव के बिंदु बनते जा रहे हैं, जो आपसी विश्वास और सहयोग को प्रभावित करते हैं। टिकाऊ और शांतिपूर्ण क्षेत्रीय जल प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए, मेकांग नदी आयोग जैसे बहुपक्षीय ढांचे को मजबूत करना और पारदर्शिता तथा आंकड़ा साझाकरण को बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है।

Chronicle ias

प्रश्न 19. भारत के सामाजिक सद्भाव के लिए सांप्रदायिकता और क्षेत्रवाद द्वारा उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा करें।

उत्तरः भारत अपनी विशाल सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधता के बावजूद ''विविधता में एकता'' का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। फिर भी, साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता जसी चुनौतियां सामाजिक सौहार्द्र और राष्ट्रीय एकता के ताने-बाने के लिए गंभीर खतरा बनी हुई हैं।

साम्प्रदायिकता से उत्पन्न चुनौतियांः

1. **ध्रुवीकरण और हिंसाः** साम्प्रदायिकता अक्सर दंगे, घृणा अपराध और समुदायों के बीच गहरी अविश्वास की भावना को जन्म देती है। 2002 के गुजरात दंगे और 2020 की दिल्ली हिंसा इसके विनाशकारी प्रभाव के ज्वलंत उदाहरण हैं।

2. **चुनावी दोहनः** कुछ राजनीतिक दल वोट बैंक की राजनीति के लिए साम्प्रदायिक भावनाओं का सहारा लेते हैं, जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण होता है और सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिलता है।

3. **धर्मनिरपेक्षता का क्षरणः** साम्प्रदायिकता संविधान में निहित धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने को कमजोर करती है, जिससे सभी नागरिकों को प्राप्त समान अधिकार और स्वतंत्रताएं खतरे में पड़ती हैं।

क्षेत्रीयता से उत्पन्न चुनौतियांः

1. **अलग राज्य या स्वायत्तता की मांगः** गोरखालैंड या बोडोलैंड जैसे आंदोलन अक्सर कानून-व्यवस्था को बाधित करते हैं और केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव उत्पन्न करते हैं।

2. **आर्थिक और रोजगार से संबंधित शिकायतेंः** क्षेत्रीयता कभी-कभी विकास में असमानता की धारणा से प्रेरित होती है, जिससे महाराष्ट्र और पूर्वोत्तर भारत जैसे क्षेत्रों में प्रवासियों के प्रति विरोध उत्पन्न होता है।

3. **राष्ट्रीय एकता के लिए खतराः** जब क्षेत्रीय पहचान को राष्ट्रीय पहचान से ऊपर रखा जाता है, तो यह एकता की भावना को कमजोर कर सहकारी संघवाद को प्रभावित करता है।

यदि साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो वे भारत के लोकतांत्रिक और बहुलतावादी मूल्यों को गंभीर नुकसान पहुँचा सकते हैं। जैसा कि भीमराव अंबेडकर ने कहा था, "बंधुत्व लोकतंत्र की जड़ है।"

इन विभाजनकारी प्रवृत्तियों का मुकाबला करने और भारत के सामाजिक सौहार्द्र को बनाए रखने के लिए समावेशी शासन को मजबूत करना, अंतर-सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करना, न्यायसंगत विकास को सुनिश्चित करना और कानून के शासन को प्रभावी बनाना अत्यंत आवश्यक है।

Chronicle ias

प्रश्न 20 आर्थिक विकास के बावजूद भारत में गरीबी एक चुनौती बनी हुई है। गरीबी उन्मूलन के लिए सरकारी पहलों की प्रभावशीलता की आलोचनात्मक जाँच करें।

उत्तर: भारत ने प्रभावशाली आर्थिक वृद्धि का अनुभव किया है और वह दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। फिर भी, गरीबी एक सतत समस्या बनी हुई है। ग्लोबल मल्टीडायमेंशनल पॉवर्टी इंडेक्स (2023) के अनुसार, भारत की लगभग 16.4% जनसंख्या अब भी बहुआयामी गरीबी का सामना कर रही है, जो स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में असमानताओं को दर्शाती है।

सरकारी पहलों की प्रभावशीलता:

1. **मनरेगा (MGNREGA):** 2005 में शुरू की गई इस योजना ने ग्रामीण परिवारों को रोजगार सुरक्षा प्रदान की है। इससे ग्रामीण मांग बढ़ी है और संकटग्रस्त प्रवास में कमी आई है। हालांकि मजदूरी भुगतान में देरी और प्रशासनिक अड़चनें इसके प्रभाव को कम कर देती हैं।

2. **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) 2013:** इस कानून ने दो-तिहाई जनसंख्या को सब्सिडीयुक्त खाद्यान्न उपलब्ध कराकर खाद्य सुरक्षा को बेहतर बनाया है। लेकिन नीति आयोग की 2021 की समीक्षा में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) में रिसाव और वास्तविक लाभार्थियों के बहिष्करण जैसी समस्याएँ उजागर हुई।

3. **प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY):** वित्तीय समावेशन के प्रयासों के तहत 50 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए हैं। लेकिन निष्क्रिय खाते और ऋण सुविधा तक सीमित पहुँच जैसी समस्याएँ अभी भी बनी हुई हैं।

4. **डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT):** डीबीटी ने पारदर्शिता बढ़ाई है और भ्रष्टाचार को कम किया है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना की कमी इसके प्रभाव को सीमित करती है।

5. **प्रधानमंत्री आवास योजना और उज्ज्वला योजना:** इन पहलों ने विशेष रूप से महिलाओं के लिए आवास और ऊर्जा पहुंच में सुधार किया है। हालांकि राज्यों के बीच कार्यान्वयन में व्यापक भिन्नता देखी गई है।

इन प्रयासों के बावजूद भी, जाति, लिंग और क्षेत्रीय असंतुलन जैसी संरचनात्मक विषमताओं के कारण गरीबी बनी हुई है। खंडित नीतियां, विभागों के बीच कमजोर समन्वय और वास्तविक समय के आंकड़ों की कमी परिणामों को बाधित करती है।

निष्कर्ष:

सरकारी पहलों ने एक बुनियादी सुरक्षा जाल तैयार किया है। हालांकि, गरीबी को स्थायी रूप से कम करने के लिए नीतियाँ समग्र, डेटा-आधारित और समावेशी होनी चाहिए, जिसमें अंतिम व्यक्ति तक सेवाएँ पहुँचाना, शिक्षा और कौशल विकास के माध्यम से सशक्तिकरण सुनिश्चित करना, और सामाजिक विषमताओं की जड़ों को संबोधित करना आवश्यक है।